शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 34-42

मिचिङ जनजाति के लोकगीतों में जनजीवन की अभिव्यक्ति

✍ डॉ. अभिजित पायेंङ

शोध-सार :

मिचिङ जनजाति असम की कई जनजातियों में से एक है। यह मंगोलीय जाति-समूह के तिब्बत-वर्मी शाखा की उत्तरी असम उप-शाखा के अंतर्गत आनेवाली जनजाति है। स्वकीय रूप से इस जनजाति के लोग सृष्टिकर्ता *चे:द्रमे:ल्अ* के द्वारा सृष्ट *द:न्यी-प:ल्अ* (सूरज-चन्द्रमा) की संतान आबुतानी के वंशज माने जाते हैं। कहावत के अनुसार आबुतानी उनके प्रथम मानव पितृ पुरुष हैं। इस जनजाति के लोकगीत स्वकीय परंपरागत बातों से भरपूर हैं। इन गीतों में मिचिङ जनजीवन के सुख-दु:ख, प्रेम-प्रीति, आनंद-विषाद, आशा-आकांक्षा, भाव-कल्पना, आवेग-अनुभूति आदि की अभिव्यक्ति मिली है। इसीलिए मिचिङ लोकगीतों को जनजीवन की अभिव्यक्ति की आख्या दी गई है। भाषाविदों ने मिचिङ लोकगीतों को विषयवस्तु और लक्षण के आधार पर *आ:बाङ, काबान, बृ:रीग, लुप, मिदाङ्, अइ-नि:तम, ममान* और *क:नि:नाम* आदि प्रकारों में विभाजित किया है।

बीज शब्द : *मिचिङ जनजाति, लोकगीत, जनजीवन ।*

1. प्रस्तावना :

उत्तरी चीन से असम के मैदानी इलाकों में मिचिङ जनजातियों के प्रवास के बारे में कोई लिखित इतिहास नहीं है, लेकिन ऐसा इतिहास पीढ़ी दर पीढ़ी पूर्वजों के लोकगीतों और कहानियों के रूप में मौखिक रूप से पारित किया गया था और अब भी यह उनके समाज में प्रचलित है। हालांकि मिचिङ जनजाति 'तानी समूह' के थे और पहाड़ों पर निवास करते थे। लेकिन इस जनजाति के लोग अब असम के मैदानी इलाकों में नदियों के किनारे रहते हैं। अब वे असम के लक्षीमपुर, धेमाजी, डिब्रुगढ़, योरहाट, माजुली, तिनिचुकीया, शिवसागर, गोलाघाट, शोणितपुर और दरङ जिले के मूल निवासी हैं।

सन् 2011 के भारत की जनगणना के अनुसार असम में मिचिङ जनजाति के लोगों की जनसंख्या 5,87,310 है, जिनमें से 2,99,790 पुरुष और 2,87,520 महिलाएँ हैं। मिचिङ जनजाति के अपने अनूठे लोकसंगीत, नृत्य और संगीत के वाद्ययंत्र हैं। इनमें से अधिकांश का प्रचलन उनके सामाजिक और धार्मिक त्योहारों में होता है। मिचिङ लोग उनके आदिपुरुष आबुतानी को माता सूर्य और पिता चंद्रमा के पुत्र मानते हैं। मिचिङ के ज्यादातर लोगों ने हिंदू धर्म ग्रहण किया है। ईसाई मिशनरियों ने मिचिङ लोगों को धर्मांतरित किया था, पर वे उन्हें पूरी तरह से ईसाई में धर्मांतरित नहीं हुए। मिचिङ जनजातियों के लोग ज्यादातर गैर-धार्मिक होते हैं। वे किसी भी सख्त धार्मिक निषेधाज्ञा की परवाह किए बिना पूरे जीवन का आनंद लेते हैं। इस जनजाति के लोगों में अंधविश्वास का प्रभाव देखा जाता है और ये परंपरागत प्रथाओं में विश्वास रखते हैं। उनके अनुसार 'गुहमिन' सबसे पुराने पूर्वजों में से एक है, जो अबोटानी के एक वंशीय परिवार के पूर्वज थे। गुमिन के पुत्रों को कुलों (*ऑपिन*) में वर्गीकृत किया जाता है, जिनके नाम समाज में मौजूदा उपनामों से दर्शाए जाते हैं। वे सभी रक्त से संबंधित भाई हैं, जिनके बीच वैवाहिक संबंध के सामाजिक प्रतिबंध हैं।

2. विश्लेषण :

मिचिङ जनजाति के लोकगीत स्वकीय परंपरागत बातों से भरपूर हैं। इन गीतों में मिचिङ जनजीवन के सुख-दुःख, प्रेम-प्रीति, आनन्द-विषाद, आशा-आकांक्षा, भाव-कल्पना, आवेग-अनुभूति आदि उपलब्धियाँ प्राप्त होती है। इसीलिए मिचिङ लोकगीत को जनजीवन की अभिव्यक्ति कहा जाता है।

भाषाविदों ने मिचिङ लोकगीतों को विषयवस्तु और लक्षण के आधार पर *आःबाङ, काबान, बृःरीग, लुप, मिदाङ, अइ-निःतम, ममान* और *कःनिःनाम* आदि प्रकारों में विभाजित करके उन पर चर्चा की है। फिर भी शोध की दृष्टि से अलग-अलग विषयवस्तु और प्रस्तुतीकरण की रीति पर नजर रखते हुए इन्हें निम्नलिखित रूपों में बाँटा जा सकता है-

2.1. *आःबाङ - मिरि आःबाङ, मिबु आःबाङ*

2.2. *काबान - दःङि काबान, मेःब काबान, यामने काबान*

2.3. *निःतम - बृःरीग निःतम, लुप निःतम, अइ-निःतम, ममान निःतम, कःनिःनाम निःतम*

2.1. *आःबाङ :*

मिबु या *मिर* मिचिङ लोगों के पुरोहित विशेष होते हैं। विभिन्न समय में इनके द्वारा प्रस्तुत किए गए गीतों को *आःबाङ* कहा जाता है। शास्त्रीय स्तर का *आःबाङ मिबु* की विशेष सृष्टि है। इसलिए इसके अधिकार भी इनके ऊपर ही नियोजित होते हैं। इसकी भाषा प्राचीन और सर्वसाधारण लोगों की समझ से बाहर होती है। *मिबु* या *मिर* के साथ संबंध रखने वाला व्यक्ति ही उसकी यह भाषा समझता है। *मिबु* सृष्टि के प्रारंभ से लेकर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, पर्वत-पहाड़, कीड़े-मकोड़े और मानव जाति की जन्म-कहानी *आःबाङ* के माध्यम से व्यक्त करते हैं। सृष्टि का प्रारंभ, इसका विकास और विकार, विभिन्न प्रकार के खेल-कूद, परिवार का गोत्र, परंपरागत इतिहास इसमें होता है। इस दृष्टि से *आःबाङ* को मिचिङ समाज का 'गीतों का इतिहास' कहा जा सकता है। इन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- *मिरि आःबाङ* और *मिबु आःबाङ*।

मिबु द्वारा रहस्यमय जगत के वर्णन से मांगलिक कर्म-काण्ड में प्रस्तुत *आःबाङ* को *मिरि आःबाङ* कहा जाता है। इस *आःबाङ* में यौवन प्राप्त लड़के-लड़कियों का सहयोग एक उल्लेखनीय बिंदु है। जैसे-

केयूम केनमङे याःयाङक

केःर कामङे याःयाङक

(कागयुंग 1989:143)

(तात्पर्यः *केयूम* बोध का अतीत और अदृश्य का भी अदृश्य है। इस शून्य *केयूम* से ही 'है' और 'नहीं', 'हाँ' या 'ना' का प्रतिफलन होकर जिस तरह पंचतत्व की सृष्टि हुआ है। इसी तरह *काःचि*,

चियाङ, आनब, बमूग और *मूकचेङ* आदि से परंपराएँ स्रजित हुई हैं ।)

मिबु द्वारा प्रस्तुत साधारण नृत्य-गीतों को *मिबु आःबाङ* कहा जाता है। यह *लेकेः निःतम* के अंतर्गत है। इसमें भी यौवन प्राप्त लड़के-लड़कियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जैसे-

चुमबुर नाकया चुमराक नाकया

चुमबुर नाकया चुमराक नाकया

आमः चिकङ्करङा देम्बया देम्बया

चिकङ्करङ् यामेःया देम्बया देम्बया

रङनेमे यापिमे तिरयाबः ब.....

रक्कामे याकामे तिरयाबः ब.....।

(पेगु 2011:78)

(तात्पर्य: हाथों में हाथ पकड़ते हुए नाच-गान करते हुए फतिंगे जिस तरह छलांग लगाते हैं, इसी तरह हम छलांग लगाते हैं। कौन कहता है सब आ जाये।)

2.2. *काबान*:

काबान का अर्थ है 'रोना'। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, स्मृति और स्वप्न कम-ज्यादा होते ही हैं। ये संचित अव्यक्त वेदनाएँ कभी-कभी गीतिमय प्रस्तुति के रूप में व्यक्त होती हैं। इसे ही 'काबान' कहा जाता है। यह व्यक्तिगत होने से भी इसमें सामूहिक चित्रण और सामूहिक जीवन की भी अभिव्यक्ति है। व्यक्तिगत जीवन की हताशा, स्मृतिचारण, अपनों से विच्छेद, भविष्य का दिशाहीन गतिपथ, अकेलेपन का भाव इन गीतों की मर्म कथा है। विषयवस्तु की दृष्टि से काबान तीन प्रकार के होते हैं- *दःयिङ काबान, मेःब काबान* और *यामने काबान*।

दःयिङ काबान में हृदय के समस्त सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, स्मृति और स्वप्न *दःयिङ* अर्थात् कहानी के रूप में सामने आते हैं। इसीलिए यह कथा-गीत सदृश होता है। जैसे-

कमजिङ लक्केब रेइय लक्केब

पितपाः लक्केब जेयाङ् लक्केब,

अइनम आलृगे काःलृग चुतागाइ

अइनम आङाबे काङाब चुतागाइ।

(पाटर 2013:383)

(तात्पर्यः अज्ञात समय से ही मेरी आँखों से तुम्हारे साथ जान-पहचान होकर हृदय का मिलन हुआ था। आँख-मिचौनी खेलते हुए तुम से ही पहला प्यार किया था।)

मेःब कावान की तुलना असमीया *बारमाही* गीत के साथ की जा सकती है। इन *कावानों* में दूर रहनेवाले पति के दुःख, पत्नी के मन में उत्पन्न प्रतिक्रिया आदि का वर्णन होता है। प्रेम से वंचित प्रेमिक-प्रेमिका के हृदय की व्यथा व्यंजित होती है। जैसे-

पेकृतमाःने पेयाःतमाःने

अइनक दंङ्कदःपे देःलाः तमाःने

अइनम काःलिङ्क काःलाःतमाःने।

(भूञा 2011:28)

(तात्पर्यः चिड़िया की भाँति उड़ पाता तो तुम्हें देखने के लिए उड़ जाता।)

यामने कावान के साथ असमीया *बियानाम* (विवाह के गीत) की कुछ साम्य मिलता है। पर कुछ अंतर भीं दोनों में देखे जाते हैं। *बियानाम* में स्मृतिशास्त्र का संयत पवित्र मिलन का मधुर स्वर स्पष्ट होता है। लेकिन *यामने कावान* में माँ-बाप के लाड़-प्यार में पली-बढ़ी बेटी द्वारा हमेशा के लिए माँ-बाप, भाई-बहन के प्यार त्याग कर एक अनजान घर की ओर जाने की मजबूरी के साथ किया गया विलाप स्पष्ट होता है। जैसे-

नाःने नाःना.....

बाःबे बाःबा.....

नान बाःन्नयेक आयाडेम मेगेःला

बूरः बूरमाङ्के आयाडेम मेगेःला

ङ चिल् आतेरे आतेर पे.....

आमिकेपे लेनदुःबडेः.....।

(कागयुंग 1989:150)

(तात्पर्यः माँ-बाप, भाई-बहन के प्यार छोड़कर आज अकेले ही दूसरे की होने निकल पड़ी हूँ।)

2.3. निःतम :

निःतम मिचिङ लोगों में बहुत ही लोकप्रिय है। इसमें पूर्ण यौवन प्राप्त लड़के-लड़कियाँ के प्रेम-विनिमय, प्रकृति का सौंदर्य, सुख-दुःख की अनुभूति की बातें व्यक्त होती हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से *निःतम* पाँच प्रकार के हैं- *बूःरीग, लुप, अइ-निःतम, ममान* और *कःनिःनाम निःतम* ।

बूःरीग निःतम विशेष ऋतुकालीन उत्सव में प्रस्तुत गीत है। यह गीत इस उत्सव के अलावा दूसरे समय में नहीं गाया जाता। इन गीतों में ऋतु वर्णन, उत्सव का तात्पर्य और जबान लड़के-लड़कियों के आनन्द-उल्लासों की प्रतिच्छवि मिलती है। जैसे-

लःले लःले दाब लःले लःले.....

यो रुःचेडेम पामङ चुतेइका

अममोम बुलूआ रुःचेङेम पामङ चूतेइका

यो तेतेङे बेरङ् तेइका

अममोम बुलूआ तेतेङे बेरङ् तेइका

यो दुमलाबेम लाम्मो चुतेइका

लेःति दुमलाबेम लाम्मो चुतेइका .....

यामप याःयाःङे रःर याःयाःङे

रगने नेगुपपे गुबाङ येकुपे

ललाद येमूल केतोन केतोने

रुःरुप येमूल केतून केतूने

लःले लःले दाब लःले लःले.....।

(भूञा 2011:29)

(तात्पर्यः आओ, हम सब मिलकर उछल-कूद करते हुए हिरन-हिरनी की तरह खुशियाँ मनाते हैं। यह यौवन बार-बार नहीं आनेवाला है। हम सब क्रमशः मृत्यु की ओर ही बढ़ रहे हैं।)

लुप निःतम कथोपकथन सूचक गीत है। ये गीत को दो व्यक्तियों के कथोपकथन द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुतीकरण की शैली तथा प्रतिपाद्य के आधर पर मिचिङ समाज में इसका अपना एक विशेष स्थान है। जैसे-

तेब-अइया तेकाःलक् तेबके तेकाःलक,

अइया तेकाःलक् गृकृने आअमाङ्,

अइ नमदाने अउम नमदाने,

तेकाङ्-अइया जेकाःलक् जेकबके जेक्काःलक्

अइया जेकाःलक् गृकृने अमोमाङ्

अइया नमेदाने अउम नम्दाने.....।

(भूञा 2011:33)

(तात्पर्यः बचपन से ही तुम को मैंने प्यार किया है। फिर भी आज तुम किसके प्यार पाकर किसी और से शादी करने को कह रहे हो ।)

मिचिङ समाज में *अइ-निःतम* का विशेष महत्व है। *अइ* का अर्थ प्यारी, *निःतम* का अर्थ है गीत। अर्थात् इसका तात्पर्य है प्यारी के लिए गाया गया गीत। इसकी तुलना असमीया *बनगीत* (वनगीत)के साथ की जाती है। यौवन की उन्मादना, जीवन का वसंत ही इस गीत की प्रेरणा के स्रोत हैं। यह गीत यौवन प्राप्त लड़के-लड़कियों के प्रेम-विवाह की वासना, निस्संगता का संगी है। *अइ-निःतम* में संयमहीन क्षुधा, काम-वासना अत्यंत सरल उपमा के द्वारा व्यक्त की गई है। जैसे-

चिङग आप्पुन पुनमेल पेत्ताङ् कापयेमेल,

आअून नम आचिन अदुःने युमदेङ आयेमेल।

(निर्मल नरह द्वारा संगृहीत)

(तात्पर्यः सेमल के फूल खिलते ही कोयल गाने लगती है। प्यारी,तुम याद आती हो निर्जनताभरी शाम में।)

ममान निःतम असमीया के हास्य-व्यंग्यात्मक गीतों के समतुल्य है। इस प्रकार के गीतों को किसी भी मांगलिक कार्य के अंत में अधेड़ उम्र के लोग सामूहिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। इनकी प्रस्तुतीकरण शैली देखने योग्य है। वही इसे सजीवता प्रदान करती है। इस तरह के गीत अब भी मैखिक रूप में प्रचलित हैं। परिवर्तित समय के प्रति ध्यान रखने हुए इनको प्रचार-प्रसार तथा संरक्षण की आवश्यकता आ पड़ी है। जैसे-

दुप-दुप करि नाचिले

बने चची नीलादै

नै काकर नै काकर दुबरि बन।

(टाइद 2015:246)

(तात्पर्यः नदी किनारे की हरी-भरी घास हवा में जिस तरह टेढ़ी हो जाती है, इसी तरह हम भी नाचते-गाते हैं।)

कःनिःनाम निःतम या *बृनिः निःतम* असमीया *निचुकनि गीत* (लोरी गीत) के समतुल्य हैं। इन गीतों में माँ द्वारा अपने बच्चे को छोड़कर काम पर चली जाना, तृष्णातुर बच्चे को दूध पिलाना, बाप द्वारा काम पर या बाज़ार की ओर चले जाना और वापस आते वक्त बच्चे के लिए पके हुए फल लाने का आस्वासन देना इत्यादि बातें होती हैं। साथ ही बच्चे को जिसने रुलाया है, उसके बारे में अपनी माँ को बताकर प्रतिशोध लेने हेतु प्रतिश्रुतिबद्ध होना आदि बातें भी शामिल रहती हैं। जैसे-

अयाउवा काप्पःय

पेक्कउअे देःदृःमाःदा

देःदृ पृःयेमेल काबलाङका देइ.....।

(कागयुंग 1989:153)

(तात्पर्यः ओ...मेरे प्यारे लाड़ले तू मत रो, चिड़िया का बसेरे से उड़ने का समय नहीं हुआ है। उड़ने को हो जाये तो रोना...।)

3. निष्कर्ष:

मिचिंङ असम की एक प्रमुख जनजाति है। यह जनजाति अन्य जनजातियों की तरह ही प्रकृति की गोद में रहना पसंद करती है। मिचिंङ लोग सहज-सरल स्वभाव के होते हैं। वे उत्सवप्रिय हैं। वे लोकगीतों के माध्यम से अपना सुख-दुख, हर्ष-

विषाद, प्रेम-प्रीति आदि की अभिव्यक्ति करते हैं। *आ:बाङ, काबान* और *नि:तम* उनके लोकगीतों के प्रमुख भेद हैं। ये लोकगीत अब भी मिचिङ लोगों के मुँह से अनायास नि:सृत होते हैं। कुछ लोकगीतों का संकलन एवं प्रकाशन तो हुआ है। पर अब भी क्षेत्र अध्ययन के द्वारा और अधिक विस्तार से इन लोकगीतों के संकलन एवं अध्ययन की आवश्यकता है।

टिप्पणी :

प्रस्तुत पत्र में आवश्यकतानुसार भूपेन हाजरिका के गीतों का लिप्यंतरण किया गया है। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा सुरक्षित रहेगी। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स','च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं-एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है। मिचिङ और असमीया भाषा के शब्द इटालिक्स में रखे गए हैं।

ग्रंथ-सूची:

कागयुंग, भृगुमणि, संपा. मिचिङ संस्कृतिर आलेख्य. संशोधित और परिवर्धित संस्करण. गुवाहाटी,1989.

टाइद,गोबिंद, संपा. मिचिङ दूरबृ आलाम. प्रथम संस्करण.धेमाजि, 2015.

टाइद, टाबु.एकुकि निबन्ध.प्रथम प्रकाश.धेमाजि:मिचिङ आगम केबाड़, 2007.

दले, बसन्त कुमार.मिचिङ संस्कृतिर समीक्षा.प्रथम प्रकाश. चंद्रप्रकाश:गुवाहाटी, 2008.

पेगु, गणेश. मिचिङ जनसंस्कृतिर आँहे-आँहे.प्रथम संस्करण. धेमाजि:नव कलिता, 2004.

पेगु, पवित्रकुमार. मिचिङ समाज-संस्कृतिर रेङणि.प्रथम प्रकाश. डिब्रुगढ़: कौस्तुभ प्रकाशन, 2011.

पाटर, पद्म, संपा. जनजाति समाज-संस्कृति.तृतीय प्रकाश.गुवाहाटी:रिङचाङ पाबलिकेचन, 2013.

पायेङ, यतीन. मिचिङ भाषा-साहित्यर चमु समीक्षा.प्रथम प्रकाश.योरहाट:शब्द प्रकाश,2011.

भूया, पूर्णानन्द. मिचिङ संस्कृतिर जिलिङणि.प्रथम प्रकाश.लयार्च बुक ष्टल: गुवाहाटी, 2011.

हाकाचाम, उपेन राभा.असमर जनजातीय संस्कृति.संशोधित और परिवर्धित संस्करण.गुवाहाटी:वाणी मन्दिर, 2010.

होचेइन, इचमाइल.मिचिङ समाज-इतिहास और संस्कृतिर ऐतिह्य.प्रथम प्रकाश.गुवाहाटी:ज्योति प्रकाशन, 2015.

हाजरिका,सूर्यकान्त,संपा.संस्कृति संचयन.चतुर्थ संस्करण.गुवाहाटी:वाणी मन्दिर, 2009.

संपर्क-सूत्र :

शिक्षण सहयोगी

आधुनिक भारतीय भाषाएँ और साहित्य अध्ययन विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी-14 (असम)